

---

.. shrI subrahmaNyagadyaM ..

॥ श्रीसुब्रह्मण्यगद्यं ॥

Document Information



---

Text title : shrIi subrahmaNyagadyaM  
File name : subragadya.itx  
Location : doc\_subrahmanya  
Language : Sanskrit  
Subject : Hinduism/religion/traditional  
Transliterated by : Antaratma antaratma at Safe-mail.net  
Proofread by : Antaratma antaratma at Safe-mail.net  
Latest update : October 7, 2005  
Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com  
Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---


Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

August 3, 2016

*sanskritdocuments.org*

---





## ॥ श्रीसुब्रह्मण्यगद्यं ॥

पुरहरनन्दन रिपुकुलभञ्जन, दिनकरकोटि रूप  
परिहृतलोकताप, शिकीन्द्रवाहन महेन्द्रपालन  
विधृतसकलभुवनमूल विधुतनिखिलदनुजतूल  
तापससमाराधित पापजविकाराजित,  
कारुण्यसलिलपूराधार मयूरवरवाहन महेन्द्रगिरिकेतन,  
भक्तिपरगम्य, शक्तिकररम्य, परिपालितनाक,  
पुरशासनपाक,, निखिललोकनायक,  
गिरिविदारिसायक, महादेवभागधेय,  
विनतशोकनिवारण, विविधलोककारण, सुरवैरिकाल  
पुरवैरिबाल, भवबन्धनविमोचन,  
दळदंबुजविलोचन, करुणामृतरससागर,  
तरुणामृतकरशेखर, वल्लीमानहारवेष  
मल्लीमालभारिकेश, परिपालितविबुधलोक,  
परिकालितविनतशोक, मुखविजितचन्द्र,  
निखिलगुणमन्दिर, भानुकोटिसदृशरूप  
वितुमनोहारिमन्दहास, रिपुशिरोदारिचन्द्रहास,  
श्रुतिकलितमणिकुण्डलरुचिविजित रविमण्डल,  
भुजवरविजितसाल भजनपरमनुजपाल, न  
ववीरसंसेवित रणधीर संभावितमनोहरशील  
महेन्द्रारिकील, कुसुमविशदहास कलशिखरनिवास,  
विजितकरणमुनिसेवित विगतमरणजनिभाषित,  
स्कन्दपुरनिवास नन्दनकृतविलास, कमलासनविनत  
चतुरागमविनुत, कलिमलविहीन कृतसेवन  
सरसिजनिकाशशुभलोचन, अहार्यानरधीर  
अनार्यानरदूर, विदळित रोगजाल, विरचितभोगमूल  
भोगीन्द्रभासित योगीन्द्रभावित, पाकशासनपरिपूजित  
नाकवासिनिकरसेवित, विद्रुतविद्याधर,  
विद्रुमहृद्याधर, दळितदनुजवेतण्ड,  
विबुधवरदकोदण्डपरिपालितभूसुर,  
मणिभूषणभासुर, अतिरम्यस्वभाव,  
श्रुतिगम्यप्रभाव, लीलाविशेषतोषितशङ्कर,  
सुमसमरदन शशधरवदन विजयीभव! विजयीभव!

॥ इति सुब्रह्मण्यगद्यं संपूर्णम् ॥

Encoded and proofread by  
Antaratma antaratma at Safe-mail.net

——  
.. shrI subrahmaNyagadyaM ..  
was typeset on August 3, 2016  
——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

